RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 2 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 19 जून 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

हद से ज्यादा होने पर महामहिम से साधा सम्पर्क और सुनाई समस्याएं

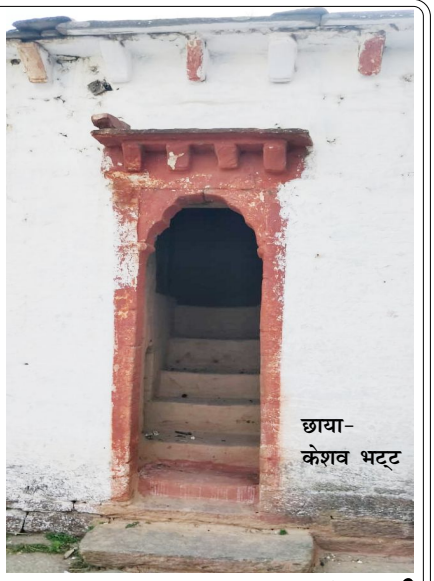

पि०हि०प्रतिनिधि

बागेश्वर। जोहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति ने सीमान्त क्षेत्र की समस्याओं को लेकर महामहिम से सम्पर्क साधा है। कई प्रकार की समस्याओं का पुलिन्दा लेकर समिति के मुख्य संरक्षक गंगा सिंह पांगती के नेतृत्व में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को मिले शिष्ट मण्डल ने जनजातियों की मुख्य समस्याओं को गिनाया। वनराजि की मूलभूत समस्याओं से भी अवगत कराया। इसके अलावा राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष हर्ष चौहान को भी तमाम समस्याओं के बारे में बताया है।

समिति की अध्यक्ष पूजा जंगपांगी, उपाध्यक्ष हेमन्त सिंह मर्तोलिया, सचिव मनोहर सिंह मर्तोलिया, उप सचिव श्रीराम सिंह राणा, कोषाध्यक्ष लक्ष्मी धर्मशक्तू, सांस्कृतिक सचिव दया रावत, पवन सिंह रावत, खुशाल सिंह मर्तोलिया, इन्द्र सिंह रावत, भूपाल सिंह रावत, शेर सिंह बृजवाल, खुशाल सिंह गनघरिया, प्रताप सिंह मर्तोलिया, भगवान सिंह मर्तोलिया की ओर से गंगा सिंह पांगती के नेतृत्व में सौंपे गये पत्र में कहा कि तिब्बत व्यापार और ऊन के कुटीर उद्योग से अपनी आजीविका चलाने वाले सीमान्त के परिवार 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद से अपनी आजीविका के लिये परेशान हैं। रोजी-रोटी के लिये सरकारी नौकरी पर आश्रित होना पड़ा है लेकिन परिस्थितियों में हुए परिवर्तन और सरकारी नीतियों और उनके क्रियान्वयन की विसंगतियों से हमारे सामने फिर एक बार जीवन यापन का प्रश्न खड़ा हो गया है। सरकार से समय-समय पर किए गए अनुरोध का कोई सकारात्मक परिणाम नहीं मिलने से पुनः अनुरोध कर रहे हैं। कहा कि विपणन के सुचारु संचालन हेतु प्रदत्त सुविधा का पुनर्स्थापन हो। अंग्रेजों द्वारा तिब्बत व्यापार और कुटीर उद्योग के संचालन हेतु हमें हल्द्वानी, बागेश्वर, रामनगर, टनकपुर आदि स्थानों में भोटिया पड़ाव नाम से भूमि आवंटित की गई थी। 19वीं सदी से ही हम इन पड़ावों में शाश्वत पट्टेदारों की तरह कब्जेदार रहे हैं। एटकिंसन के गजेटियर से इसकी पुष्टि की जा सकती है। सरकार ने इन सब पर कब्जा कर लिया है। इस लिये कुटीर उत्पाद के विपणन के लिए बनाए गए भवन तथा सम्बन्धित भूमि को जोहार सांस्कृतिक संगठन को आवंटित कर दिया जाए।

मांग की है कि पूर्व उल्लिखित सभी पड़ावों में जे.एस.डब्लू़ एस. को समुचित भूमि आवंटि कर दिया जाय ताकि पूर्व की भांति यह अपनी पारम्परिक कुटीर उद्योग का संचालन कर सकें। आरक्षण नियमावली और उनके क्रियान्वयन पर कहा है कि उत्तराखण्ड में भोटिया जनजाति को चार प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। रोस्टर प्वाइंट 24 और रोस्टरों का जिला स्तर पर विभागवार विकेन्द्रीकरण कर दिए जाने से व्यवहार में नौकरी से ही वंचित कर दिया गया है क्योंकि अधिकांश जिलास्तरीय रोस्टरों में स्वीकृत पद रोस्टर प्वाइंट से कम हैं। इसलिये उत्तराखण्ड सरकार को निर्देशित किया जाए कि रोस्टर प्वाइंट 13 किया जाए और कोई भी रोस्टर उससे कम पद स्वीकृति वाली न हो। इसके लिये एक से अधिक विभागों के समान पदों को मिलाकर सम्मिलित रोस्टश्र बनाया जा सकता है। कुटीर उद्योग, जड़ी बूटी और पर्यटन विकास के लिये महामहिम से कहा कि आज के सन्दर्भ में यही हमारी रोजी रोटी रह गए हैं लेकिन इसके लिए आवश्यक संसाधन और विपणन की सुविधा सरकारी सहयोग के बिना सम्भव नहीं है।

शिष्टमण्डल ने महामहिम को बताया कि सीमा क्षेत्र में सड़कों के निर्माण की भारत सरकार की योजना जहाँ अधिकांश प्रकरणों में फलीभूत हो चुकी है वहीं मुनस्यारी-मिलम मार्ग अभी भी अधूरा है। इसका यथाशीघ्र पूर्ण होना सामरिक और स्थानीय लोगों की आर्थिकी के साथ ही सीमान्त गाँवों के पुनर्वास से हमारी शौका

शेष पृष्ठ 4 पर

पहाड़ में सीजन की भीड़........

सड़कें हुई जाम, खूब हुआ धमाल अब फिर से वही पुराना हाल।

छाया- केशव भट्ट

काहूं गई

दीवान सिंह कठायत

आहा वों दिन कहूं गई?
रात्तै उठि क्वालैलि दाँत माँजण
पाणि माटैलि हाथ साफ करण
छां पाणिक साग म्वाट् र्‌वाट खाँण
बस्त नौरूंन हालि, फटक मारि इस्कूल जाँण
ओहो कथप ही हरा जस गई- अहा वों दिन कहूं गई?
रात्तै रातुक रेडुआक समाचार
बी.बी.सी. के विचार विविधभारती गीतार
लखनऊ नजीमाबादक पहड़ि झंकार
कुमाउंनी गीत टेप रिकार्डनक बहार
दिगौ देखनै देखनै सब खामोश है गई- आहा वों दिन कहूं गई?
हिसालुक त्वाप काफलैकि दाणि
जगब भरि किल्मोड़ घिंघारू मेवैकि खाणि
थैल भरि नारिंग माल्टा चूख
पेट भरि खा बेर लै, लागि जाँछी भूख
ओहो आब सब स्वीण देखण है गई- आहा वों दिन कहूं गई?
भुटैन भट्टी लसपसान् मसूरी हुयुक
लाल-लाल भात भ्यूं मडू रवाट् मसूराक
छाँक् नली घ्यूक हड़पी तौलि दुदाक
कॉसैकि थालि डाड़ पनौल लुवाक
हराणि हो सबै, सिल्फर इस्टील छा गई- आहा वों दिन कहूं गई?
मै बाप इज बौज्यू जेड़ज् जिबैज्यू
काक् काखि् कैंज पूज्य् बड़बाज्यू
क्वे नै कूंन आब सब मम्मी पापा वाल् हैं गई
हाय हैलो सुणी आब् पैलाग् ज्यूजाग ल्हैं गई
दिगौ कस छ्यू वो जमान् आब् कि है गई- आहा वों दिन कहूं गई?

देली-द्वार, सब वही कुछ
मानसून की आहट, बैठकें
मेलों की समेट, वापसी भी

कार्यालय प्रतिनिधि

ग्रीष्मकालीन यात्रा सीजन पर उत्तराखण्ड के सभी प्रमुख मार्ग जाम से बेहाल रहे हैं। सड़क जाम पर कई बार पर्यटकों-यात्रियों का रोष भी देखने को मिला और स्थानीय निवासियों का गुस्सा भी। इस समय तक भी सड़कें जाम हैं लेकिन वापसी का क्रम शुरु हो चुका है। मानसून की आहट भी है और इसके लिये प्रशासन द्वारा बैठक कर तैयारियां की हैं। मेलों की समेट भी दिखाई दे रही है। 15 जून को पूर्णागिरी मेला भी पूरा हो चुका है। चार धाम यात्रियों की रेलपेल अभी बनी रहेगी लेकिन वापसी का क्रम तेज है।

पहाड़ के यात्रा सीजन के बाद क्या? वही सब दिखाई देगा और दिख भी रहा है कि वीरान गाँव वैसे ही हैं, खाली पड़े खेत-घर उन्हीं हालतों में हैं। यह पहाड़ की सच्चाई है। शिक्षा और चिकित्सा को लेकर चिन्ता में घिरा अधिकांश पहाड़ी समाज अपने इलाके को छोड़ने पर मजबूर हो जाता है। सीमान्त क्षेत्र तक तो सोचना भी कठिन है कि किन हालातों में लोग हैं। सरकार अपनी नीतियों का डंका बजा रही है और मोदी सरकार के नौ साल पूरा होने का जश्न भी मनाया जा रहा है। आये दिन महोत्सवों की बाढ़ से ऐसा दर्शाया जा रहा है कि सबकुछ ठीक-ठाक है। सच्चाई तो यही है कि यात्रा सीजन की भीड़ इन दिनों में है।

योजनाओं को पलीता लगाया जा रहा है

धन्य है, इस्टीमेट पूछने पर सीमेंट दिया गया

थल। सरकार द्वारा वीरान होते गाँवों में रोजगार के साधन जुटाते हुए उन्हें आबाद करने की भली योजनाएं विचारी गई हैं लेकिन उन्हें पलीता लगाया जा रहा है। उक्राद के वरिष्ठ नेता गोविन्द लाल वर्मा ने उद्यान विभाग द्वारा पॉलीहाउस योजना पर सवाल उठाते हैं। ग्राम प्रधानों सहित श्री वर्मा ने इस बात पर रोष जताया कि योजना के तहत पॉलीहाउस गाँवों में बनाये गये जिन्हें उखड़ने का डर है क्योंकि उन्हें मजबूत नहीं किया गया। एडीओ को जब कहा गया कि कितने व्यय में यह बन रहा है तो वह नहीं बता सके और एक-एक कट्टा सीमेंट पालीहाउस के के लिये पहुँचाया गया। यानी की कहने के बाद सीमेंट पहुँचता है। श्री वर्मा कहते हैं इससे समझा जा सकता है कि विकास योजनाओं को किस प्रकार पलीता लगाया जा रहा है। हत्वाल गाँव, हजेदी तमाम जगह पालीहाउस का कार्य हुआ है लेकिन इनके बनाने की प्रक्रिया में कितना इस्टीमेंट होता है यह तो जनता को पता होना ही चाहिये। ताकि पता चल सके की कितनी धनराशि का कार्य हो रहा है। यह योजनाएं केवल औपचारिका मात्र न हों इसके लिये इनकी जाँच होनी चाहिये। यदि योजनाओं का ईमानदारी से पालन हो तो इसके परिणाम भी सुखद होंगे और रोजगार के साथ वीरान होते गाँवों में हरियाली होगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पुरोला जैसे हालात नहीं उपजें

उत्तरकाशी के पुरोला क्षेत्र में कई दिनों से तनाव के हालात बने हुए हैं और समुदाय विशेष के साथ ही कई लोग असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। इसे लेकर जन संगठनों ने चिन्ता भी जताई है। किसी भी समस्या का समाधान मारकाट नहीं होता है। भीड़ की हिंसा कभी भी ठीक नहीं है। ऐसा नहीं होना चाहिये। असल में हुआ यह था कि एक नाबालिक को रजाई-गद्दे का काम करने वाले यूपी के दो धर्म विशेष के युवा बहला कर देहरादून ले जा रहे थे, जिन्हें कुछ लोगों ने पेट्रोल पम्प के पास पकड़ लिया। यह वीडियो खूब वायरल हुआ है। इस मामले में पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई कर दी। लेकिन मचा हल्ला बढ़ता जा रहा है। पूरे क्षेत्र में यह ऐलान कर दिया गया कि धर्म विशेष के द्वारा इस प्रकार का किया जा रहा है वह हट जाएं। ऐसे व्यापारियों को दुकानें खाली कर देने को कहा गया। बकायदा पोस्टर चस्पा कर अपील कर दी गई। ऐसे में कई दिनों तक दुकान बन्द होने से परेशानी का सामना करना पड़ा।

समुदाय विशेष के लोगों से दुकान-मकान खाली करवाने का एलान वर्षों से बने हुए माहौल में कड़वाहट है। प्रशासन के संज्ञान में आते ही पोस्टर चस्पा करने वाले अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। दूसरी ओर पुरोला क्षेत्र में बनी गम्भीर स्थिति को लेकर जन संगठनों और विपक्षी दलों ने चिन्ता जताई है। संगठनों ने इस घटनाक्रम को लेकर सरकार की निष्क्रियता पर सवाल उठाए। उत्तरांचल प्रेस क्लब में आयोजित बैठक में वक्ताओं ने कहा कि यौन शोषण के बहाने जिस तरीके से नफरती और हिंसक प्रचार को राज्य में बढ़ावा दिया जा रहा है, यह कानून और संविधान के विरुद्ध है। किसी भी अपराध को लेकर सख्त कानूनी कार्रवाई जरूरी हो। फिर चाहे अपराधी का धर्म या जाति कोई भी हो। यह कानून के राज का बुनियादी सिद्धान्त है।

पुरोला जैसे हालात कहीं भी ठीक नहीं हैं। किसी घटना के निपटारे के लिये हमारे संविधान में नियम-कानून बने हैं। उसके अनुसार अपराध की सजा मिले। क्षेत्र का माहौल अच्छा बनाना वहाँ के लोगों के हाथ में है। इसके लिये जरूरी नहीं कि उग्रता ही रास्ता हो। हमारे अपने तौर-तरीके इतने बुनियादी हैं कि वह हालातों को जानते और न्याय की बात करते हैं। ऐसे में उन्हें भी समझना चाहिये जो बात-बात पर माहौल खराब कर सकते हैं। फिर पुरोला की घटना में पुलिस कार्रवाई तो हो ही रही है। अपने समाज को भला बताने और बनाने वालों को संयमित भी रहना है। पुरोला जैसे हालात कहीं नहीं उपजें यह कामना हो।

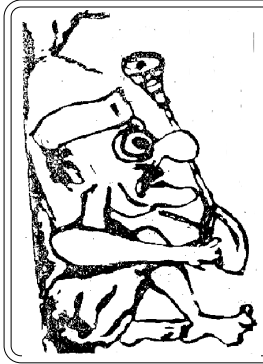

फसक

दाज्यू, अब असल मिलना बहुत कठिन हो गया ठैरा

चुनाव के लिये डबल-ट्राक जुटाने में लगे हैं बल

दाज्यू, काशीपुर में नकली सीमेन्ट बनाने वाली फैक्ट्री का भण्डाफोड़ होने से पुलिस बहुत खुश है। दाज्यू, पुलिस ने खुश होना भी चाहिये क्योंकि कभी-कभार ऐसे मामले पकड़े जाते हैं। वर्ना तो कौन पूछने वाला है गलियों में ब्राण्डेड कम्पनियों के नाम पर नकली सामान का भण्डारा होने वाला ठैरा। बिस्कुट, नमकीन से लेकर टायर, मोटर सबकुछ तो नम्बर दो का बनने और मिलने वाला हुआ। तेल-पनीर से लेकर मसाला-साबुन तक डुप्लीकेट तैयार है। दाज्यू, अब असल मिलना बहुत कठिन हो गया ठैरा। यह पूछो कि कितना प्रतिशत मिलावट वाला है। सरकार बनाने और चलाने वालों की चिन्ताएं बहुत ज्यादा हैं। चुनाव के लिये डबल-ट्राक भी चाहिये। कर डालो तुड़ाई-खुदाई-सुताई.....। नेता लोग चुनाव के लिये डबल-ट्राक जुटाने में लगे हैं बल।

दाज्यू, कंक्रीट के शहर में अब साल सागौन की लकड़ी दुर्लभ है और चोर जंगल ही चुरा रहे हैं। लकड़ी की काठी काठ का घोड़ा.....। तस्करों का हथौड़ा पहले से चलता रहा है। रामनगर के तराई पश्चिम वन प्रभाग के अन्तर्गत ज्वालावन में यूकेलिप्टस के सौ पेड़ काट डाले बल। इसके अलावा वन निगम की ओर से काटे गए पेड़ों के गिल्टे भी गायब हैं। भगवान बचाए इन तस्करों से।

नैनीताल जिले के ओखलकाण्डा में शिक्षकों के साथ जनप्रतिनिधियों के दुर्व्यव्हार मामले में शिक्षक संगठन विधायक से मिला। दाज्यू, कलजुग में यही सब होना है। नौकरी करना मतलब गाली सुनने की आदत होनी चाहिये। आप समझ ही रहे होंगे कि लल्लू-चप्पू सभी हाबी होने लगे हैं। पटरी पार वाले कालेज में सूखा हुआ छात्र नेता भी बड़े बाबू से भिड़ गया बल। कह रहा था- 'कितना बजट आया है दिखाओ। लाइन मिला दूंगा।' दाज्यू, अब कहाँ रहे नौकरी के ठाट, सब गुवेन हो गया ठैरा। बब्बूलाल को क्या कहें? उसकी एक ही रट है- 'राज्य और केन्द्र सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाएं। मोदी सरकार के नौ वर्ष का कार्यकाल भरापूरा रहा है।'

खानपुर विधायक उमेश कुमार और पूर्व विधायक कुंवर चैम्पियन के बीच मुंहजोरी लगातार हो रही है। दाज्यू, कुंवर तो राजा ही ठैरा। आपस में ही चोर-चकार कहकर खुश हो रहे हैं बल। लपक कर आगे बढ़ने की चाह में बहुत कुछ हो जाने वाला ठैरा।

प्रदेश में लवजेहाद को लेकर बबंडर मचा हुआ है। कोई कहे मेरा, कोई कहे तेरा.....लागा चुनरी में दाग छुटाऊँ कैंस.....चिकियां कलाईं रे.....। सब कुछ खड़पट्ट हो गया ठैरा। मारे हंगामे के बैचेनी बढ़ती जा रही है। साफ हवा में जहर घोलने वालों को सोट्याना होगा फिर वह चाहे अपना हो या पराया। क्या तमाशा हो रहा है दाज्यू? जिसको देखो लट्ठमपेल को तैयार हो जा रहा है। आंखिर उत्तराखण्ड राज्य के लिये इसी लिये अंगड़ाई दी थी। डब्लू और सच्चू सिर्फ चुनाव की बात करते हैं। कह रहे थे- 'चाहे कुर्सी जिसकी हो, अपना रोकड़ा पूरा हो जाना चाहिये।' दाज्यू, राजनीति भी तो गुवेन हो गई ठैरी। सारे मिलावट वाले लोग लपट रहे हैं बल। भगवान सबकी भली करे। अशान्ति किसी भी समाज के लिये उलझन हुई। संभलने और संभालने का काम ठैरा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

हिमालया इण्टर कालेज, चकौड़ी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

नारायण सिंह बोहरा

बोहरा बुक डिपो

चामुण्डा रोड

गंगोलीहाट

आपणै तड़िक तराण भल———रतन सिंह किरमोलिया

आपणै तड़िक तराण भल
अर आपणै पौंठिक बल
मैं हमार पुरखों ल कै रौ
सांच्ची य पारि हुण चौं अमल
पर्याईंक भरोंस पर्याई भय
ऐन मौक काम नि उन
फिरि पछताण पड़ौं
नि है सकनि सजसमाव
फिर के नि हुन
आपणै हँसि आपणै काम बिगड़ौं
पछां शरमाण पड़ौं
भरोंस पक्क हुंछ
आपणै तड़ीं पै
अर आपणै पौंठों पै
भरोंसै ल लै
पक्क भरोंस लैक हुण तो
चौं मगर ऐन मौक पारि
ध्वौक नि दिजो कैं
हम राय वैक बाट चाईं
वैक के पत्त नै पाणि
भरोंस लैक नि रै ग्याय
क्वे लै आब अघिल उज्याणि
द्वि दिना क ड्यार यां
सकुशो रौण चौं आपण पराण
आपूं पारी कै भरोंस अर
टेक द्यों आपणै तराण।

ज्योतिष की बातें - 131

24 जून 2023 को बुध मित्रराशि वृषभ को छोड़कर स्वराशि मिथुन में प्रवेश करेगा, बुधादित्य योग भी बनेगा। इसके पूर्व 21 जून को बुध 20 दिनों के लिए अस्त भी हो जाएगा लेकिन बुध के अस्त होने का उसके फलों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए अगले 15 दिन बुध अपने कारक विषयों जैसे- बुद्धिमत्ता, व्यवसाय आदि क्षेत्रें में वृषभ, मीन, मकर, वृश्चिक, कन्या व सिंह राशियों के लिए अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य राशि के जातकों को भी सामान्य फल प्रदान करता रहेगा।

21 जून 2023 को सूर्य सायन मान से कर्क राशि में प्रवेश करेगा । वर्षा ऋतु का प्रारम्भ हो जाएगा। अगले दो माह त्रिफला चूर्ण में थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करना स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

श्री जगन्नाथ रथयात्र महोत्सव- यह महोत्सव आषाढ़ शुक्ल द्वितीया उदय व्यापिनी परन्तु न्यूनतम त्रिमुहूर्त व्यापिनी तिथि में मनाया जाता है। अतः मंगलवार 20 जून 2023 को जगन्नाथ रथ यात्र महोत्सव मनाया जाएगा । स्कन्द पुराण में ऐसा वर्णन आया है कि जो इस रथयात्र में भगवान श्रीकृष्ण, बलभद्र और सुभद्रा के दर्शन करता है वह मोक्ष का भागी होता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 22

योग क्या है

आजकल 'योग' शब्द की बहुत चर्चा है। योग वास्तव में क्या है? सन्दर्भ के अनुसार योग का अर्थ अलग-अलग होता है। गणित में दो संख्याओं के जोड़ को 'योग' कहते हैं, जैसे दो और एक का 'योग' तीन आदि। आयुर्वेद में विभिन्न द्रव्यों के विधिपूर्वक किए गए मिश्रण को 'योग' कहते हैं, जैसे- योगराज गुग्गुल आदि। ज्योतिष शास्त्र में जन्मकुण्डली में ग्रहों की विशेष स्थिति को 'योग' कहते हैं, जैसे- राजयोग आदि। दर्शन ग्रन्थों में जीवात्मा को परमात्मा से मिलन को योग कहा जाता है, जैसे- ज्ञानयोग आदि। लेकिन यदि सन्दर्भ न दिया हो तो सामान्य रूप से जीवात्मा और परमात्मा के मिलन को ही योग कहा जाता है। योग वास्तव में छः दर्शनों में से एक दर्शन है। योगदर्शन पर सर्वाधिक प्राचीन व सर्वमान्य ग्रन्थ पातंजल योगदर्शन है। पतंजलि ने अपने योगदर्शन में यम, नियम, आसन आदि अष्टांग में सिद्धासन, वज्रासन, सुखासन आदि आसनों का वर्णन किया है जिसमें व्यक्ति साधना के लिए अधिक समय तक सुखपूर्वक बैठ सकें। शीर्षासन मंडूकासन आदि इस प्रकार के आसनों का वर्णन कहीं नहीं है। लेकिन आजकल आसन को ही जन सामान्य योग समझता है। शरीर के अंगों को तोड़ने मरोड़ने और हाथ पैरों को इधर उधर पटकने को लोग अब योग कहने लगे हैं जो कि वास्तव में नट विद्या है। व्यायाम, कसरत, वर्जिश, परिश्रम आदि शब्द लुप्तप्राय हो गए हैं। सभी प्रकार के शारीरिक श्रम को अब योग कहने लगे हैं। डीजे पर डांस करने को भी कुछ लोग गर्व से योग करना कहते हैं। योग शब्द का घोर पतन हो चुका है, पाखण्ड बढ़ गया है, योग का व्यापार भी शुरू हो चुका है। योग को एक दर्शन के रूप में योग ही रहने देना चाहिए । इसका मजाक नहीं बनाना चाहिए। हरि ॐ

-सरल

कला संस्कृति विचार राजनीति के साथ ही अपने हिमालय की आवाज। ये केवल समचार पत्र नहीं। ये है मिशन अपनों के बीच

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मल्ला जोहार विकास समिति वार्षिक की बैठक

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति की वार्षिक बैठक देवेन्द्रा ज्योति रावत मिलन केन्द्र में हुई जिसमें सीमान्त क्षेत्र के 13 राजस्व ग्रामों की दशा एवं खण्डहर मकानों की स्थिति पर चर्चा हुई। पूर्व आयुक्त सुरेन्द्र सिंह पांगती सहित तमाम वक्ताओं ने सीमा के ग्रामों को आबाद रखने की दिशा में स्थानीय लोगों की परम्परा और सरकारी की नीति पर बातचीज की। कहा सीमान्त क्षेत्र में खाद्यान्न सहित जरूरत की सामग्री समय से उपलब्ध करवाकर लोगों को प्रोत्साहन देना चाहिये। भालू व जंगली जानवरों से हो रहे मामलों में स्पष्ट नीति बनाते हुए पीड़ितों को मदद दी जाए। विधायक हरीश धामी ने कहा कि वह मल्ला जोहार की समस्याओं के लिये सड़क से सदन तक लड़ने को तैयार हैं। वहाँ की जो भी समस्याएं हैं उन्हें समिति प्रस्ताव बनाकर प्रशासन के द्वारा भिजवाए एवं उन्हें भी दे ताकि सीधे मुख्यमंत्री से वार्ता के अलावा अन्य उपाय भी किये जा सकें। क्योंकि सरकार सीमा के अन्तिम ग्राम को प्रथम कह रही है। जब प्रथम गाँव ही बेहाल होंगे तो शेष क्या होगा? जबकि सीमा में स्थानीय लोगों की ज्यादा हलचल रहनी चाहिये। इसके लिये उन्हें सुख-सुविधाएं दी जाएं।

समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने कहा कि आजादी के 75 साल बाद भी जोहार क्षेत्र की उपेक्षा की जा रही है जबकि मल्ला जोहार विकास समिति बराबर शासन-प्रशासन को इन समस्याओं से अवगत कराती रही है। बैठक का संचालन लोक बहादुर जंगपांगी ने किया।

बैठक में उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलनकारी गंगा सिंह पांगती, जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया, डॉ.एन.एस.पांगती, बहादुर सिंह क्वीरियाल, भूपेन्द्र सिंह पांगती, डॉ. वाईएस धर्मशक्तू, श्रीमती तारा पांगती, डॉ.दुर्गा प्रसाद, श्यामसुन्दर पांगती, गंगा सिंह मर्तोलिया, राजेन्द्र सिंह रावत, किशन जंगपांगी, शंकर सिंह धर्मशक्तू, डॉ.पी. एस.बृजवाल, प्रयाग सिंह पांगती, डॉ. जर्नादन पांगती, राजेन्द्र पांगती, मनोज ध र्मशक्तू, लक्ष्मण सिंह पांगती, भूपेश पांगती आदि उपस्थित थे। बैठक में पुलिस, पशुपालन विभाग, लोनिवि, उद्यान विभाग से उपस्थिति अधिकारियों ने सीमान्त क्षेत्र के लिये उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

कुन्दन सिंह पांगती

क्लास-ए ठेकेदार

मुनस्यारी

परिक्रमा

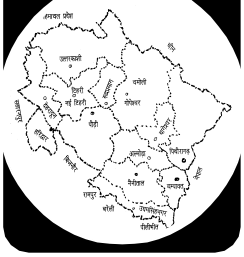

नैनीताल में टनल पार्किंग बनेगी

देहरादून। उत्तराखण्ड में पहली टनल पार्किंग कैप्टीफाल नैनीताल में बनेगी। पार्किंग की समस्या से निपटने के लिये यह सब प्रयोग होने समय की मांग है। बताया जा रहा है कि इसके अलावा पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी सहित 12 शहरों में यह सब होना है।

हद से ज्यादा....

प्रथम पृष्ठ का शेष

संस्कृति के संरक्षण के लिये आवश्यक है। बताया कि उत्तराखण्ड राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग में विगत एक वर्ष से अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के पद रिक्त हैं, जिससे राज्य की जनजातियों की समस्याएं लम्बित हैं। इन पदों पर नियुक्ति की जाए। इसके अलावा कहा कि जड़ी-बूटी, हस्तशिल्प और हथकरघा के विपणन हेतु भोटिया पड़ाव बनखोला बागेश्वर के भवन सम्बन्धित भूमि को जोहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति को हस्तान्तरित किया जाए।

समिति की अध्यक्ष पूजा जंगपांगी ने वनराजि जनजाति के मूलभूत समस्याओं शिक्षा, सड़क, आवास, स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी महामहिम से चर्चा की। पंचायती राज संगठन के पत्र का हवाला देते हुए राजी आदिम जनजाति समुदाय को राष्ट्र विकास की मुख्य धारा में जोड़ने की बात कही। कहा कि राजि जनजाति की मूलभूत समस्याओं के निराकरण के लिये विभागाध्यक्ष को निर्देश देने की कृपा करेंगे। क्योंकि यह जनजाति आज भी हर प्रकार से परेशानी में है।

समिति सदस्यों ने जनजाति आयोग भारत सरकार के अध्यक्ष हर्ष चौहान के समक्ष भी उक्त समस्याओं को रखते हुए मांग की है कि उत्तराखण्ड में जनजातियों की मूलभूत समस्याओं को सुलटाने के लिये निर्देशित करेंगे। समिति की ओर से हिये गये पत्र में कहा कि राजि आदिम जाति बीमारी, भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी से जूझ रही है। बताया कि डीडीहाट के जमतड़ी मदनपुरी, कूटा, चौरानी, फुलतड़ी गुना वनरौतों की वस्तियां हैं जो अभी भी सड़क से आठ किमी दूरी तक खड़ी चढ़ाई में हैं। शासन-प्रशासन द्वारा दी जा रही सुविध ाओं से यह लोग वंचित हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं से दूर हैं, जिससे कई अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इनकी दयनीय हालात देखते हुए राज्य स्तर पर जनजाति निदेशालय द्वारा लगातार कार्यवाही करवाई जाए। समय-समय पर अधिकारियों की टीम क्षेत्र का दौरा करें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मुख्यमंत्री का विधानसभा क्षेत्र चम्पावत अखाड़ा बन चुका है

छात्र राजनीति में दिख रखने लगे हैं पैंतरेबाजी, बन रही है रणनीति

चम्पावत। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का विधानसभा क्षेत्र इन दिनों उनके एक वर्ष के विधायक कार्यकाल का उत्साह मना रहा है वहीं राजनीति का अखाड़ा बन चुका है। इससे पहले किसी ने सोचा भी नहीं था कि श्री धामी चम्पावत सीट पर लड़ेंगे और सीएम इस क्षेत्र से होगा। पूर्व विधायक कैलाश गहतोड़ी द्वारा सीट खाली करने के बाद उपचुनाव में जिस प्रकार पुष्कर धामी ने विजय प्राप्त की और तेज-तर्रारी दिखाई उससे विपक्ष के अधिकांश नेता पलट कर भाजपा में हैं। पार्टी बदलने के पीछे चाहे सत्ता का नशा हो या कोई दूसरा लोभ यह एक बात है लेकिन इतना साफ दिखाई दे रहा है कि वर्तमान में भाजपा संगठन एकदम हावी है। इसकी लहर युवाओं के बीच भारी करने के लिये संगठन भी रणनीति से चल रहा है। प्रदेश में निकाय चुनाव और लोक सभा चुनाव से पहले माहौल को और पक्ष में करने के लिये जिस तरह की पैंतरेबाजी छात्र नेताओं ने चली है वह चौंकाने वाली बात नहीं है। जुलाई में नया शिक्षा शुरु होते ही छात्र राजनीति और भी ज्यादा होगी। छात्र संघ चुनाव के लिये छात्र नेता अपने करतब दिखा रहे हैं। विगत दिनों चम्पावत डिग्री कालेज में प्राध्यपकों की मांग को लेकर छात्र संघ अध्यक्ष मनीष महर और विश्व विद्यालय प्रतिनिधि अंकित भट्ट कालेज की छत पर चढ़ गये। छत पर चढ़े छात्र नेता मांग पूरी न होने पर आत्महत्या की धमकी देने लगे। बच्चे अपनी जिद में कहीं कोई गलत कदम न उठा लें यह देखते हुए प्रशासन मौके पर आया और डेढ़ घण्टे तक चले ड्रामे के बाद छात्र नेता मान गये। यह भी बताते चलें कि सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय बनने के बाद जिस प्रकार से बागेश्वर और पिथौरागढ़ को इसका कैम्पस बनाया गया है और अब बाद में चम्पावत को भी कैम्पस का दर्जा दिया जा चुका है। शिक्षा के क्षेत्र नया ध माल है। नया विश्वविद्यालय ऊपर से तीन कैम्पसों की तैयारी.....। चम्पावत विधानसभा में तो हाल यह है कि सीएम का नाम लेकर कई नेता तरावट में हैं। सीएम लगातार विधानसभा क्षेत्र के कार्यक्रमों में भागीदारी कर रहे हैं लेकिन उन्हें कुशल प्रशासनिक दक्षता के लिये इस बात से भी सावधान हो जाना चाहिये कि बात-बात पर उनका नाम लेकर कहीं कोई दबाव नहीं बनाएं। पुष्कर धामी अपनी रणनीति में बेहद सफल रहे हैं लेकिन यदि उनके नाम पर कोई बेलगाम हुआ तो राजनीति की बाजी उलट होगी। क्योंकि देखने में आ रहा है कि अपने कार्य से ज्यादा सीएम तक मुंह दिखाने और स्थानीय प्रशासन में अपने रौब को बढ़ाने वाले भी सक्रिय हैं। इसका प्रभाव भविष्य की राजनीति पर होगा।

अतिक्रमण हटाओ अभियान की खिलाफत के साथ राजनीति

बेहड़, शुक्ला, रणजीत खुलकर मैदान में, सुमित, यशपाल भी बरसे

उत्तराखण्ड में चल रहे अतिक्रमण हटाओ अभियान की खिलाफत के साथ राजनीति का अध्याय शुरु हो चुका है। धामी सरकार ने वन व तमाम सरकारी भूमि पर हुए अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिये और कार्रवाई शुरु हो गई। इस अभियान में अभी तक सैकड़ों पक्के अतिक्रमण हट चुके हैं। इससे दिक्कत में आये लोगों का गुस्सा होना स्वाभाविक है। यहाँ तक कि वर्षों से रोजी-रोटी में जुड़े लोगों को बिखरना पड़ रहा है। परेशान लोगों की गुहार अपने नेताओं से है और वह प्रदर्शन भी कर रहे हैं। सवाल तो यह भी है कि अतिक्रमण किसकी आड़ में हुए हैं? राजनीति के संरक्षण में ही कब्जे होते रहे हैं और ऐसे बस्तियों व इलाकों को बचाने के पीछे अपने लिये बोट बैंक तैयार करना नेताओं की मंशा रही है।

प्रदेश सरकार के आदेश के बाद अभियान तो जारी है लेकिन कई नेता विधायक विरोध में उतर आये हैं। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य और कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष करन महरा का कहना है कि प्रदेश सरकार अतिक्रमण के नाम पर गरीबों को उजाड़ने लगी है। केन्द्रीय रक्षा मंत्री अजय भट्ट ने कहा है कि सरकार का ध्यान है, पुरानी बसासत को नहीं हटाया जा रहा है।

रामनगर में पूर्व विधायक रणजीत सिंह रावत ने कार्बेट क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही का विरोध करते हुए कहा कि अतिक्रमण हटाने के नाम पर मनमानी नहीं होने दी जायेगी। यदि यह सब नहीं रुका तो उग्र आन्दोलन किया जायेगा। हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश ने भी अतिक्रमण हटाओ अभियान में पहले पुनर्वास की अपील करते हुए प्रभावित लोगों के साथ प्रदर्शन किया है। किच्छा में पूर्व विधायक राजेश शुक्ला ने प्रभावित लोगों की भीड़ के साथ प्रदर्शन करते हुए कहा है कि वह अपने क्षेत्र में किसी के आशियाने को नहीं उजड़ने देंगे।

रुद्रपुर में तो अतिक्रमण के विरोध में बड़े प्रदर्शन देखने को मिले। विधायक तिलकराज बेहड़ के नेतृत्व में प्रभावितों ने कलेक्ट्रेट गेट पर धरना दिया। बेहड़ ने कहा कि पूरे प्रदेश में अतिक्रमण के नाम पर लोगों को उजाड़ा जा रहा है। यह लड़ाई किच्छा रुद्रपुर की ही नहीं पूरे प्रदेश में अतिक्रमण के नाम पर हो रही बर्बादी के खिलाफ है। उन्होंने सरकार से इस कार्य को तत्काल बन्द करने की अपील की।

अतिक्रमण हटाओ अभियान के बाद इसके विरोध में हरिद्वार, रुड़की, देहरादून में भी आवाज उठी है। अतिक्रमण हटाओ के डण्डे से यह तो है कि घिचपिच होते बाजार साफ दिखने लगे हैं। प्रभावित लोगों का रोष तो झेलना ही होगा।

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

रीठा सोपस्टोन माइन्स

ग्राम- रीठा, बेरीनाग

प्रबन्ध निदेशक- सुधीर राठौर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

उत्तम सिंह जंगपांगी
सैनिक कालोनी
जोहार नगर, भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

के.एस.रावत
'वसुन्धरा' सैनिक कालौनी
जोहार नगर
हल्द्वानी

हरीश सिंह धपवाल
बागनाथ कालोनी, बिठौरिया नं.१
हरिपुरनायक,
हल्द्वानी

चन्दा सिंह
'अराध्यम' शान्ति विहार
विठौरिया न.१
हल्द्वानी

हेरिटेज स्कूल
ग्राम इन्द्रपुर
पो. चोरगलिया
हल्द्वानी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व
आषाढ़ कृष्ण पक्ष
18 जून- अमावस्या
15 जून- श्री जगन्नाथ रथयात्रा पुरी
24 जून- कौमारिकी षष्ठी
29 जून- हरिश्यनी एकादशी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)